TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL

विश्व रंग

वनमाली सृजन पीठ

साहित्य, संस्कृति एवं सृजन के लिये

• भोपाल • खण्डवा • बिलासपुर • दिल्ली
• हजारीबाग • वैशाली • लखनऊ

राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान 2026

कथा एवं उपन्यास में सर्जनात्मक उपलब्धि के लिये

24-25 एवं 26 फरवरी 2026

स्कोप ग्लोबल स्किल्स विश्वविद्यालय, भोपाल

एवं

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

आयोजक

वनमाली सृजन पीठ, विश्व रंग फाउंडेशन,

स्कोप ग्लोबल स्किल्स विश्वविद्यालय एवं रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

आमंत्रण

राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान 2026

कथा एवं उपन्यास में सर्जनात्मक उपलब्धि के लिये

मान्यवर,

आपसे साझा करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता है कि
वनमाली सृजन पीठ का प्रतिष्ठा आयोजन

राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान समारोह

24 से 26 फरवरी 2026 के बीच स्कोप ग्लोबल स्किल्स विश्वविद्यालय
और रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल
के सुरम्य परिसरों में किया जा रहा हैं.

सम्मान समारोह का शुभारंभ
सुप्रसिद्ध लोकगायक पद्मश्री **प्रहलाद सिंह टिपाणिया**
के कबीर गायन से होगा.

यह समारोह ज्ञानपीठ सम्मान से सम्मानित
वरिष्ठ उड़िया कथाकार **प्रतिभा राय** के मुख्य आतिथ्य में आयोजित होगा.

सम्मानित रचनाकार

मृदुला गर्ग, जितेन्द्र भाटिया, अलका सरावगी, महेश दर्पण,
उर्मिला शिरीष, यतीन्द्र मिश्र, कुणाल सिंह, अंजुम शर्मा

इस राष्ट्रीय सम्मान समारोह में आप सादर आमंत्रित हैं !

ज्योति रघुवंशी
राष्ट्रीय संयोजक
वनमाली सृजन पीठ

संतोष चौबे
राष्ट्रीय अध्यक्ष
वनमाली सृजन पीठ

प्रथम दिवस - मंगलवार, 24 फरवरी
मुक्ताकाश मंच, स्कोप ग्लोबल स्किल्स विश्वविद्यालय, भोपाल

4.30 से 5.00 बजे

चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन एवं अवलोकन

5.00 से 6.00 बजे - पूर्वरंग

पद्मश्री प्रहलाद सिंह टिपाणिया का कबीर गायन

6.30 से 8.00 बजे

राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान समारोह

मुख्य अतिथि

प्रतिभा राय

(ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित)

सम्मानित रचनाकार

मृदुला गर्ग, जितेन्द्र भाटिया, अलका सरावगी, महेश दर्पण,
उर्मिला शिरीष, यतीन्द्र मिश्र, कुणाल सिंह, अंजुम शर्मा

स्वागत उद्बोधन

संतोष चौबे, राष्ट्रीय अध्यक्ष, वनमाली सृजनपीठ

फिल्म प्रदर्शन, लोकार्पण एवं रचनाकारों का सम्मान

संचालन - विनय उपाध्याय

प्रशस्ति पाठ - संगीता पाठक

संयोजन- ज्योति रघुवंशी

आभार

डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी

द्वितीय दिवस, बुधवार, 25 फरवरी
कथा सभागार, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

10.30 से 12 बजे

सम्मानित रचनाकारों का रचनापाठ

अध्यक्षता - प्रतिभा राय

पाठ - मृदुला गर्ग, अलका सरावगी

सान्निध्य - राजेन्द्र प्रसाद मिश्र, संतोष चौबे

संचालन - संगीता पाठक

12.30 से 1.15 बजे

डिजिटल युग में शास्त्रीय संगीत - रियाज से रील तक

यतीन्द्र मिश्र से विश्वविद्यालय के छात्रों की बातचीत

संचालन - विनय उपाध्याय

1.15 से 2.00 बजे

डिजिटल युग में साहित्य - पाठक परिवर्तन और नयी प्रासंगिकताएँ

अंजुम शर्मा से विश्वविद्यालय के छात्रों की बातचीत

संचालन - विकास अवस्थी

सान्निध्य - संतोष चौबे, लीलाधर मंडलोई

3 से 3.45 बजे - पूर्वरंग

रंगसंगीत, टैगोर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

4 से 5 बजे

मगर शेक्सपियर को याद रखना

(संतोष चौबे की कहानी की नाट्य प्रस्तुति)

निर्देशन - संजय मेहता । संचालन - विक्रांत भट्ट

शारदा सभागार, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

तृतीय दिवस, गुरुवार, 26 फरवरी
कथा सभागार, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

10.30 से 12 बजे

सम्मानित रचनाकारों का रचनापाठ

अध्यक्षता - संतोष चौबे

पाठ - जितेंद्र भाटिया, उर्मिला शिरीष, कुणाल सिंह

सान्निध्य - महेश दर्पण

संचालन - अरुणेश शुक्ल

12.30 से 2.00 बजे

परिचर्चा - समकालीन युवा कहानी की संवेदनाएँ और सामाजिक परिदृश्य

अध्यक्षता - मुकेश वर्मा

सान्निध्य - शशांक

आमंत्रित वक्ता - गीताश्री, संजय शेफर्ड, कैफी हाशमी

संचालन - कुणाल सिंह

समाहार - संतोष चौबे

3.00 से 4.30 बजे - विश्वविद्यालय भ्रमण

मुक्तधारा, टैगोर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में रंगसंगीत

राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान 2026
सम्मानित रचनाकार

मृदुला गर्ग (दिल्ली)
वनमाली कथाशीर्ष सम्मान

जितेन्द्र भाटिया (मुंबई)
वनमाली कथा अनुवाद सम्मान

अलका सरावगी (कोलकाता)
वनमाली राष्ट्रीय कथा सम्मान

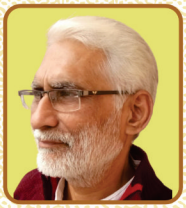

महेश दर्पण (दिल्ली)
वनमाली कथा आलोचना सम्मान

उर्मिला शिरीष (भोपाल)
वनमाली कथा मध्यप्रदेश सम्मान

यतीन्द्र मिश्र (अयोध्या)
वनमाली कथेतर सम्मान

कुणाल सिंह (भोपाल)
वनमाली युवा कथा सम्मान

अंजुम शर्मा (दिल्ली)
वनमाली डिज़िटल साहित्य सम्मान

सुप्रतिष्ठित कथाकार, शिक्षाविद् तथा विचारक जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली' के रचनात्मक योगदान और स्मृति को समर्पित वनमाली सृजन पीठ एक साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा रचनाधर्मी अनुष्ठान है, जो परंपरा तथा आधुनिक आग्रहों के बीच संवाद तैयार करने सतत सक्रिय है। साहित्य तथा कलाओं की विभिन्न विधाओं में हो रही सर्जना को प्रस्तुत करने के साथ ही उसके प्रति लोकरुचि का सम्मानजनक परिवेश निर्मित करना भी पीठ की प्रवृत्तियों में शामिल है। इस आकांक्षा के चलते रचनाधर्मियों से संवाद और विमर्श के सत्रों के अलावा यह सृजन पीठ शोध, अन्वेषण, अध्ययन तथा लेखन के लिए नवोन्मेषी प्रयासों तथा सृजनशील प्रतिभाओं को चिन्हित करने और उन्हें अभिव्यक्ति के यथासंभव अवसर उपलब्ध कराने का काम भी करती है। बहुलता का आदर और समावेशी रचनात्मक आचरण हमारी गतिशीलता के अभीष्ट हैं।

सक्रियता के आधार बिंदु

पुस्तकालय तथा अध्ययन केन्द्र की स्थापना । कथा, उपन्यास और आलोचना के साथ ही कविता तथा अन्य साहित्यिक विधाओं पर एकाग्र रचनापाठ एवं संवाद गोष्ठियां । स्थानीय तथा प्रवासी साहित्यकार-कलाकारों के प्रदर्शन-सह व्याख्यान । पुस्तक चर्चाएं । साहित्य तथा कलाओं के अंतर्सम्बंधों की पड़ताल । अग्रज और नई पीढ़ी के सर्जकों के बीच विमर्श चयनित कलाकारों-साहित्यकारों के मोनोग्राफ का प्रकाशन । बच्चों की कलात्मक अभिरुचि को प्रोत्साहन । अध्ययन और शोध के अवसर उपलब्ध कराना । उत्कृष्ट सर्जना का सम्मान । पारंपरिक कलारूपों और समकालीन सृजन-संवाद का दस्तावेजीकरण । साहित्यिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले शहरों-कस्बों में विभिन्न आयोजन । लोक, शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, सुगम संगीत तथा वृन्दगान की प्रस्तुतियाँ । समानधर्मी संस्थाओं के साथ मिलकर गतिविधियों की साझेदारी।

जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली'

चालीस से साठ के दशक के बीच वनमाली जी हिंदी के कथा जगत के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर थे. 1934 में उनकी पहली कहानी `जिल्दसाज' कलकत्ते से निकलने वाले `विश्वमित्र' मासिक में छपी और उसके बाद लगभग पच्चीस वर्षों तक वे प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं `सरस्वती', `कहानी', `विश्वमित्र', `विशाल भारत', `लोकमित्र', `भारती',`माया', `माधुरी' आदि में नियमित रूप से प्रकाशित होते रहे। अनुभूति की तीव्रता कहानी में नाटकीय प्रभाव, सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक समाज और विश्लेषण की क्षमता के कारण उनकी कहानियों को व्यापक पाठक वर्ग और आलोचकों दोनों से ही सराहना प्राप्त हुई।

आचार्य नंददुलारे वाजपेई ने अपने श्रेष्ठ कहानियों के संकलन में उनकी कहानी `आदमी और कुत्ता' को स्थान दिया था. करीब बीस वर्षों तक मध्य प्रदेश के अनेक विद्यालयों महाविद्यालयों में वनमाली जी की कहानियां पढ़ाई जाती रही। उन्होंने करीब सौ से ऊपर कहानियां, व्यंग्य लेख एवं निबंध लिख। कथा साहित्य के अलावा उनके व्यंग्य निबंध भी खासे चर्चित रहे हैं। आकाशवाणी इंदौर से उनकी कहानियां नियमित रूप से प्रसारित होती रही।

कथा साहित्य के अतिरिक्त वनमाली जी का शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा। वे अविभाजित मध्यप्रदेश के अग्रणी शिक्षाविदों में थे। गांधी जी के आह्वान पर कई वर्षों तक प्रौढ़ शिक्षा के काम में लगे रहे। फिर शिक्षक, प्रधानाध्यापक, एवं उपसंचालक के रूप में उन्होंने बिलासपुर, खंडवा और भोपाल में कार्य किया और इस बीच उनकी पुस्तकों के माध्यम से, शालाओं और शिक्षण विधियों में नवाचार के कारण और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद की समिति के सदस्य के रूप में शिक्षा जगत में उन्होंने महत्वपूर्ण जगह बना ली थी. 1962 में डॉ. राधाकृष्णन के हाथों उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से विभूषित किया गया।

वनमाली जी का जन्म 1 अगस्त 1912 को आगरा में हुआ। उन्होंने अपना पूरा जीवन मध्यप्रदेश (छत्तीसगढ़ सहित) में गुजारा और 30 अप्रैल 1976 को भोपाल में उनका निधन हुआ। उनका पहला कथा संग्रह `जिल्दसाज' उनकी मृत्यु के बाद 1983 में तथा `प्रतिनिधि कहानियां' के नाम से दूसरा संग्रह 1995 में प्रकाशित हुआ था। वर्ष 2009 में `वनमाली समग्र' का पहला खंड तथा वर्ष 2011 में संतोष चौबे के संपादन में `वनमाली स्मृति' तथा `वनमाली सृजन' शीर्षक से दो खंड प्रकाशित हुये। हाल के वर्षों में दस कहानियाँ, वनमाली जी की संपूर्ण कहानियाँ, कला का आदर्श : कुछ निबंध कुछ पत्र, वनमाली : एक कृतीव्यक्तित्व, दस युवा आलोचकों की दृष्टि में वनमाली, जैसी वनमाली केंद्रित पुस्तकों का प्रकाशन भी हुआ है। जिल्दसाज, रेल का डिब्बा,मांझी जैसी कई कहानियों का नाट्य मंचन राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक देवेंद्रराज अंकुर एवं अन्य ख्यात निर्देशकों जैसे संजय मेहता, मनोज नायर द्वारा देश के विभिन्न स्थानों पर किया गया है।

वनमाली सृजन पीठ, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय
वनमाली भवन, ई -7/22, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016, संपर्क - 91.9826493844